महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र

चौकमाफी पीपीगंज गोरखपुर उत्तर प्रदेश २७३१६५

Mahayogi Gorakhnath Krishi Vigyan Kendra

Chaukmafi (Peppeganj), Jangal Kaudiya Gorakhpur, U.P-273165

Website : http://www.mgkvk.in Email: gorakhpurkvk2@gmail.com

बत्तख पालन: आज के परिदृश्य का एक उभरता व्यवसाय

डॉ विवेक प्रताप सिंह

विषय वस्तु विशेषज्ञ - पशुपालन

देश में 4 तरह की बतखें पाई जाती हैं। उनमें खाकी **कैंपबेल** भूरे रंग की व छोटी होती है। **वाइट पेकन** बतख ब्रायलर यानी मांस के लिए होती है, काफी बड़ी होती है और गाँव कस्बों में आसानी से पाला जा सकता है। **मोती या मसकोवी** बतख बड़ी, काले व सफेद रंग की होती है। इसका मीट बहुत नर्म होता है। चौथी बतख देसी किस्म की होती है। यह बतख एक साल में 280 तक अंडे देती है। यह खुद इधर-उधर घूम कर कीड़े-मकोड़े ढूंढ़कर खाती है।

- अंडे के लिए खाकी कैंपबेल नस्ल है, यह कम से कम एक साल में 280 से 300 अंडे देती है
- छोटे किसान मछली, धान व मक्के के साथ भी बतख पालने से अच्छी कमाई कर सकते हैं।
- बतख को ज्यादातर इंट्रीगेटेड फार्मिंग में प्रयोग किया जा रहा है। अगर एक हेक्टेयर मछली का तालाब है तो उसमें आप कम से कम ढाई सौ बतख को छोड़ सकते हैं। बतख का बीट मछली के लिए आहार बनेगा, जिससे मछली को न्यूट्रीशियशन मिलेगा और मछली की बढ़वार भी जल्दी होगी।
- ऐसे ही धान की खेती में अगर बतख छोड़ दिए जाए तो उसमें जो भी कीड़े होंगे, जो खेती को खराब करते हैं, यह सब बतख खा लेते हैं। इससे लाभ बढ़ जाता है।
- बतखें दो साल तक अंडे देती हैं। नए चूजों को अलग रख कर बतखों के समूह बनाए जा सकते हैं, ताकि हर पांच-छह महीने पर अंडा व मीट देने वाली बतखें लगातार तैयार होती रहे।